प्रभु येशुआ की ओर से कलीसिया को पत्र

लेखक: वर्नर वोईवोद – स्विट्ज़रलैंड

"जिसके पास कान हो, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है?''

यह परमेश्वर के वचन है, प्रभु जी ने कहा कि
"मेरी कलीसिया आपातकालीन स्थिति में है।"

मेरी देह (कलीसिया) गंभीर और प्राणघातक स्थिति में है, पर आप यह विश्वास नही करते। और न आप महसूस करते है क्योंकि आप सो रहे है, आप बहुत व्यस्त हैं, यह नींद जो है एक स्वंय की धार्मिकता की भावना, स्वंय की संतुष्टी, स्वार्थी और गुण गुणापन है। दूसरे लोग भी आपकी नही सुनते क्योंकि वे भी अपने स्वंय के शारीरिक और भौतिक उन्नती के कार्यो में व्यस्त हैं।

मैं तुम सबको वापस लेआऊंगा क्योंकि मैं तुम से प्रेम करता हूँ, तुम सब मेरे हो क्योंकि तुम्हें वह बनाना चाहता है जो तुम्हारे लिए नियुक्त है और तुम वह कार्य करोंगे जिसके लिये तुम्हें बुलाया गया है। मैं तुम्हें तैयार करूंगा, क्योंकि वर्तमान स्थिती आपमें से बहुत लोग खोए हुए है यद्यपि आप विश्वास करते है कि आपने उद्धार प्राप्त कर लिया है।

तीन क्षेत्रों में आपको जागरूक होना है, जिनमें मैं आपको वापस बुला सकता हूँ।

क्षेत्र: 1

प्रभु जी कहते हैं कि "मैं तुम्हारे विरूद्ध में हूँ, क्योंकि तुमने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है। वापस अपने पहले प्रेम के पास आओं।"

तुमने मुझे तज दिया है जो कि बहता हुआ जीवित सोता है। इसके बदले में तुमने अपने लिए बहुत से गढहे खोद लिए है, जिसमे बदबूदार पानी भरा हुवा हैं, तुम सब जो भारी बोझ से दबे हुए हो, मेरे पास आओं मैं तुम्हें विश्राम दूंगा और मैं तुम्हारे साथ रहूंगा।

"तुम मुझमें बने रहों और मैं तुममें ताकि तुम बहुतायत से फल लाओ।"
यदि आप फल नहीं ला रहे है याने आत्माए नहीं जीत रहे हैं तो आप मुझसे नहीं जुड़े हैं। (यूहन्ना 15:4)

मैं तुम्हें गहरे और प्रेम भरे रिश्तें के लिए फिर से बुला रहा हूँ। मेरे पिता और मैं तुमसे गहरा रिश्ता रखना चाहते है जिसके जरिये हम अपने आपको तुम पर प्रकट करेंगे।

"अनन्त जीवन यह है कि तुम एक मात्र सच्चे परमेश्वर को और प्रभु येशुआ को जिसे पिता ने भेजा है जाने।" (यूहन्ना 17:3)

अगर तुम मुझे गहराई और अच्छी तरह जानोंगे तब तुम्हारा प्रेम गहरा और उत्साहपूर्ण हो जायेगा। तुम बहुदा मेरे और पिता की खबर पाते रहते हो फिर भी तुम हमसे बहुत दूर हो और हमें नही जानते। अगर एक व्यक्ति को प्रेम करना और जानना चाहता है, तो उसके पास एक रास्ता है, और वह यह कि एक दूसरे के साथ समय बितायें। हम तुम्हारे लिए ठहरे है और तुम्हारे साथ समय बिताना चाहते है ताकि तुम हमें अच्छी तरह जानों। मैंने कभी यह दुविधा में नही छोड़ा कि मुझसे और पिता से प्रेम करने का क्या मतलब है?

"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे। (यूहन्ना 14:15) मेरी सबसे यहम आज्ञांए यह है (1) परमेश्वर पिता से प्रेम करो। (लूका 10:27), (2) आपने पड़ोसी से प्रेम करो।, (3) एक दूसरे से प्रेम करो। (यूहन्ना 13:34-35), (4) अपने सताने से प्रेम करो और उनके लियें प्रार्थना करों। (5) जाओं और सब जाति के लोगों को चेला बनाओं, उन्हें बपतिस्मा दो और उन्हें आज्ञाकारी बनाकर चेले बनाने के लिए भेज दो। (मत्ती 28:19; यूहन्ना 20:21)

इसके विपरीत यह भी स्पष्ट और साफ है।

"जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता।" (यूहन्ना 14:25)

तुम्हारे प्रेम का मापदण्ड पिता और मेरे लिए कितना है, वह इससे स्पष्ट नही होता कि तुम कितना चर्च जाते हो, कितनी बार तुम स्तुती प्रंशांसा के गीत गाते हो, बाइबिल पढ़ते हो, प्रार्थना करते हो, परन्तु तुम्हारी यह सब धार्मिकता गंदे चीथड़े के समान है, क्योंकि जीवन पर्यन्त एक भी भटकी हुई भेड़ को खोजकर उनका उद्धार दिलाने का कोई प्रयास नहीं करते है, याद रखे कि आपका उद्धार इसलिए हुआ कि दुसरो का उद्धार कराएं। पापियों का उद्धार कराने से आपका नाम मेमने कि किताब में लिखें जाते है। जिनके नाम मेमने कि किताब में नहीं है वे स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करने पाएंगे। (प्रकाशित वाक्य 20:12-15; लुका 10:17-20; यशायाह 64:6)

तुम अपने आपको मसीही कहते हो, परन्तु तुम अन्दर से खोखले हो। मैं तुम्हारे हृदय के द्वार पर फिर से खटखटाता हूँ, आशा करता हूँ, कि तुम मुझे प्रवेश करने दोगे। (प्रकाशितवाक्य 3:20) आप में से बहुत से लोग मुझे दरवाजे के बाहर खड़े रहने देते है, कुछ है जो मुझे समय समय पर आमंत्रित करते है। मुझको तुमसे मिलने की कोई अनुमती नहीं चाहिए, क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूँ। मंदिर मेरा है, चाहे वह आप या पूरी कलीसिया हो सकती है। तुम मेरी देह (कलीसिया) हो, और तुम सब मेरे देह (कलीसिया) के जीवित सदस्य हो, (रोमियों 12:12) मैं सिर हूँ (कुल्स्सियों 1:18) परन्तु तुम मेरी आज्ञायों का उलंघन करते हो। मैंने तुमको पहले से चेतावनी दिया था, कि तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे अ्रगुवे उठेंगे, जो तुमको अपने पीछे खींच लेने को भरमायेंगे (प्रेरितों के काम 20:30; मत्ती 24:11-13) अधिकांश ऐसे अगुवे जो कलीसिया में प्रति रविवार आने और दशवांश देने के बाध्य करते है पर उनमें विधर्मियों का उद्धार कराने का कोई बोझ नही है। जबकि मैंने आगे से बता दिया है कि मेरी महिमा इससे होती है की तुम बहुत सा फल लाओं तबही तुम मेरे शिष्य कहलाओंगे। (यूहन्ना 15:8)

“क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।”(मत्ती 16:24-26)

इसलिए अति प्रिय तुम मेरी सुनो और तैयार हो जओं, बाहर निकलो और मेरे पास आ जाओं।

क्षेत्र: 2

“मैं तुम्हारें विरूद्ध में हूँ, क्योंकि तुमने मेरे वचन को ग्रहण नही किया और मुझसे बिछड़ गये। मेरे वचनो पर वापस आओं”

“आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।” (यूहन्ना 1:1-3)

इन वचनों के द्वारा तुमको स्पष्ट हो जायेगा कि मेरा वचन क्या है? मेरे वचनों के द्वारा तुम कायल किये जाओंगे और इसके द्वारा तुम मेरे वचनों को पाने के लिए भूखे होंगे।

“वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।” (यूहन्ना 1:14)

प्रभु जी कहते हैं, कि यह वचन से स्पष्ट है, कि तुम मुझको मेरे वचन से अलग नही कर सकते, यदि कोई मेरे वचन से अलग होता है, तो वह मुझसे और मेरे पिता से आलग हो जाता है। अगर तुम मुझे अच्छी तरह और गहराई से जानना चाहते हो, तब तुमको मेरे वचन के द्वारा ही सबसे पहले जानना होगा। मेरे वचन को तुम पढ़ते हो या सुनते हो और देखते हो, कि मैं कौन हूँ? और मैं कैसा हूँ? और क्या करता हूँ? यह मेरे दिल को खुला करके दिखाता है, कि मेरे विचार, मेरी भावना, मेरा चरित्र, और मेरा मनुष्यत्व, कैसा हैं? कैसे तुम मुझको जानोगे और मुझसे प्रेम करोगे, जब तक तुम मेरे वचन से प्रेम न करोगे, दिन और रात तुम अधिकांश वचनो में डूब जाते हो और हर प्रकार के विविधताओं में जैसे टी.वी. समाचार पत्र, मोबाइल, एस.एम.एस., वाट्स एप्प, और ई-मेल ईत्यादि, यह सब आपका ध्यान खींचता है, और आपके विचारों में घुस जाता है। आपकी दृष्टि में आपको स्वयं दास बनाके कैद कर लेता है। इस प्रकार की जबरदस्त दिशानिर्देश आदत बनने वाली स्थिती जो हर समय बढ़ती जाती है। मैं आपको अपने वचन के द्वारा बुलाता हूँ। उस स्थान पर जहां अनन्त वचन में शांन्ति है, उन शब्दों में जिसमें रचनात्मक शक्ति पाई जाती है। और यह दोनो पवित्रात्मा के द्वारा संभव है, मै बोलता हूँ और वह तुरन्त हो जाता है, जब आप मुझे तुरन्त चाहते है। तब आपको मेरे शब्दों को ग्रहण करना है। बहुत से लोग है जिनके पास वचन तो है पर वे नही सुनते है और ना ही पढ़ते है, अनेक लोग पढ़ते तो है, परन्तु जो वचन कहता है, वह नही करते, इसलिए वह निर्रथक और निष्फल हो जाता है।

“उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।” (मत्ती 4:4)
“आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।” (मत्ती 24:35)

“आप कैसे मेरे विषय में सीख सकते है और बिना मेरे वचन के ज्ञान और वचन में कैसे बढ़ सकते है?”

“हर एक पवित्राशास्त्रा परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।” (2तिमोथी 3:16-17)

बढ़ते हुए अंधकार में आप कैसे निश्चय कर सकते है? कि आप सही रास्ते पर है? और सही रास्ते पर रहना है।

“तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।” (भजन संहिता 119:105)

आप देखिए कि यदि आप वचन से हट जांए आप कभी भी परिपक्व बेटे और बेदियां अपने पिता के नहीं होंगे। आप भटक जायेंगे और शायद अनन्तकाल के लिए खो जाएगें। क्या आप में से कोई यह चाहता है, कि उनके साथ हों? फल स्वरूप आपको हर समय परमेश्वर के वचन की ओर मुड़ना है।

“फिर से मुडकर परमेश्वर के वचन की ओर बढिए।

क्षेत्र: 3

“मैं तुम्हारे विरूद्ध में हूँ क्योंकि तुमने अपने आप को अपनी जड़ से दूर कर लिया है। वापस अपने मूल जड़ को समझने के लिए आओं, यहूदी और इस्त्राएल के लिए। क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। (यूहन्ना 4:22)

अतिप्रिय बच्चों तुम्हारा भाई पौलुस तुमको समझाता है, कि तुम्हारी मूल जड़ के विषय में रोमियों की पत्री में लिखता है, पाहिले वह स्पष्ट करता है कि मैं अपने लोगों के विरूद्ध में नही हूँ।

“इसलिये मैं कहता हूँ, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया? कदापि नहीं; सो मैं कहता हूं क्या उन्हों ने इसलिये ठोकर खाई, कि गिर पड़ें? कदापि नहीं, परन्तु उन के गिरने के कारण अन्य जातियों को उद्धार मिला, कि उन्हें जलन हो।” (रोमियों 11:1, 11)

तब पौलुस यह समझाता है, कि “मेरा व्यवहार इस्त्राएली जाति और विश्वासियों से जो अन्य देशों से आये है, वह जैतून के पेड़ की असली तस्वीर का खुलासा करता है। क्योंकि उसकी अनाज्ञाकारिता से कुछ पेड़ की डालियां टूट गई है। परमेश्वर को मेरी दया के लिये धन्यवाद, अब तुम जो अन्य देशों से विश्वासी हो अब असली जैतून के पेड़ में कलम कर दिये गये हो, अब तुम उसी की जड़ से जीते हो, परन्तु इस बार मैं फिर से चितौनी देता हूँ कि तुम अपने आप को उनसे ऊपर न समझना, डालियों पर घमंड न करनाः और यदि तू घमंड करे, तो जान रख, कि तू जड़ को नहीं, परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है। (रोमियों 11:18)

तुमको स्पष्ट होना है प्रियों बेटे और बेटियों कि तुम कलम लगाई हुई डालियां हो और तुम्हें अपने जड़ से जुड़े रहना है, ताकि तुम सक्षम रहो। प्राचिन धर्म गुरू ने जानबूझ कर अपने आपको सब

यहूदी संगती के विषय से अलग कर लिया था। पहली कलीसिया के बिश्वासी जो यहूदी पुरूष और महिलाओं से बना था, बाद में उसमें गैर यहूदी शिष्य मिलायें गये थे, परन्तु वह एक मृतक कलीसिया बन गई। क्योंकि वे अपनी जड़ से अलग हो गये थें, इस प्रकार कलीसिया ने अपनी सारी सामर्थ खो दी।

"तू जीवता तो कहलाता है, पर, है मरा हुआ।" (प्रकाशित वाक्य 3:1)

प्रतिस्थापन (**Replacement Theology**) अध्यात्मिक ज्ञान जिसका जन्म यूरोप में हुआ था, वह विश्व के हर एक कलीसिया में पहुंच गया। यह गलत शिक्षा सिखाती है कि यहूदी और इस्त्राएयली को परमेश्वर ने अस्वीकार और श्रापित कर दिया, परन्तु मसीही कलीसिया ने उसे स्वीकार किया। यह एक भयानक झूठ और विधर्म है, इस्त्राएल के परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया था, कि उसके वंश के लोगों को आशीषित किया और जो तुम्हें श्राप दे उन्हें मैं श्रापित करूंगा।

"और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमंडल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।" (उत्पत्ती 12:3)

"यह बड़ी शोक पूर्ण घटना हुई कि तुमने अपने आपको अपने जड़ से अलग कर लिया है, और उनके प्रति एक श्राप ठहर गये हो। परन्तु मैंने कभी भी अपनी योजनाओं और उद्देश्यों को उनके प्रति और तुम्हारे प्रति गुप्त नही रखा।" पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लियाः और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था, जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पंहुच होती है।(इफिसियों 2:13-18)

आप दोनों मिलकर एक नये मनुष्य है, मेरी कलीसिया जो कि यहूदियों के साथ और अन्यजातियां जो मुझ पर विश्वास करते हैं, अर्थात यीशु मसीह, अब दोनो एक परिवार के हो गये हो, और आपका पिता इस्त्राएल का परमेश्वर है। मैंने स्वंय यह सुलह दोनो के लिए खरीदी है और यह संभव हुआ है कि इसके लिए मैंने क्रूस के द्वारा बड़ी रकम अदा की है।

पर आपने कलीसिया में क्या किया? इसके बजाय की उनसे प्रेम करें, संम्मान दे, और उन्हें गले मिलाए, आपने उन्हें धोखा दिया, और तिरस्कृत किया, उनके सम्मान को नष्ट किया, उनके विरूद्ध में झूठी बातें की, उन्हें सताया, उनके साथ बुरा व्यवहार किया, उनकी हत्या की, यहां तक की उनका वध (संहार) किया। यह सब मेरे नाम जो यहूदीयों का राजा है, और तुम्हारा मसीहा है उसके नाम से किया, ये आपने क्या किया? आपने कौन सा भयानक अन्याय उन पर किया? घृणा इसके साथ में उन्हें तुच्छ और, मेरे चुने हुए इस्त्राएलियों के साथ जो अब तक नही टूटा था। यह अपनी कलीसिया में तुम बर्दाश्त नही करना, इस खराबी को उजागर करके पूरी तरह से खत्म कर देना। क्योंकि वे मेरे पहिलौठे है, और मेरी आंखों के तारे हैं। आप यह नही समझ सकते है, कि आप मेरे साथ यह क्या कर रहे है? और मेरे

पिता के जब आप अपने बड़े भाई के विरूद्ध में दोषा रोपण करते हो। और आप यह भी नही समझते हैं, कि आप पर इसका कितना खराब परिणाम होगा।

इसलिए प्रिय बच्चों मैं अति शीघ्र रीती से कह रहा हूँ, बाहर आओं और अपना रूख बदलो और फिर से अपनी जड़ या मूल को समझने के लिए वापस आओं। यह संदेश परमेश्वर ने मुझे दिया है। फिर उस ने मुझ से कहा, इस पुस्तक की भविष्यद्ववाणी की बातों को बन्द मत कर; क्योंकि समय निकट है। जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे। देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। (प्रकाशित वाक्य 22:10-12)

आर्शिवाद एंव बधाई

मैं भाईयों एवं बहनो से आग्रह करता हूँ कि यह पत्र सबको पढ़कर सुनाया जाये, प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ हों।

“शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें। तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा। हे भाइयों, हमारे लिये प्रार्थना करो। सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। मैं तुम्हें प्रभु की शपथ देता हूँ, कि यह पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई जाए। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।” (1 थिस्सलुनिकियों 5:23-28)

प्रार्थी

लेखक: वर्नर वोईवोद – स्विट्ज़रलैंड